माननीय राज्यपाल, हरियाणा प्रो0 कप्तान सिंह सोलंकी द्वारा 27 मार्च 2016 को इन्द्रप्रस्थ आडिटोरियम, पंचकूला में संत विवेकानन्द मिलेनियम स्कूल, पिंजौर के पुरस्कार वितरण व सांस्कृतिक समारोह में दिया गया भाषण।

कालका विधानसभा क्षेत्र से विधायक श्रीमती लतिका शर्मा जी, पुंज एजुकेशन सोसायटी, नई दिल्ली की संस्थापक श्रीमती कमल राय जी, स्कूल मैनेजमैंट कमेटी के अध्यक्ष श्री ए0 आर0 शर्मा जी, Parents-Teachers Association के चेयरमैन कर्नल एन0 आर0 बाभेवाल जी, विद्यालय के प्राचार्य महोदय श्री पीयूष पूंज जी, स्कूल मैनेजमैंट कमेटी के अन्य सभी सदस्य महानुभाव, अभिभावक महानुभाव, सभी आमंत्रित विशिष्टजन, प्रशासनिक अधिकारीगण, मीडिया पर्सनज तथा इस वार्षिक उत्सव में उपस्थित सभी मेरे प्यारे बच्चो!

किसी भी संस्था का वार्षिकोत्सव उस संस्था की पहचान होता है, संस्था के अंदर जो कुछ हो रहा है उसका प्रकटीकरण होता है। हम सबने इसको देखा। आयोजन बहुत होते हैं और आगे भी होते रहेंगे, लेकिन जो कुछ हमने देखा है, यह आयोजन बहुत सुंदर था। कुछ आयोजन ऐसे होते हैं जो मन को प्रभावित करते हैं। लेकिन कुछ आयोजन ऐसे होते हैं जो मन को भी प्रभावित करते हैं और हमारी अपनी बुद्धि को भी दिशा देते हैं, मार्गदर्शन देते हैं, प्रेरणा देते हैं। लेकिन वे आयोजन धन्य होते हैं जो मन को भी अच्छे लगें, हमारी बुद्धि को भी योग्य दिशा दें और आत्मा को प्रसन्न कर दें। इस आयोजन में ये तीनों बातें थीं। मन के लिए सुहावना था, बुद्धि के लिए मार्गदर्शी और प्रेरणादायक था और आत्मा को प्रसन्न करने वाला था।

जिस विद्यालय का आयोजन इतना सुंदर है उस विद्यालय के बच्चे कैसे होंगे? और इन बच्चों को बनाने वाले, पढाने वाले, दिशा देने वाले, आयोजन की तैयारी कराने वाले हमारे शिक्षक और शिक्षिकाएँ कैसी होंगी? आप अभिभावकगण बहुत धन्य हैं कि आपके बच्चे इस स्कूल के अंदर वह सब कुछ सीख रहे हैं जो जीवन में सिर्फ अक्षर ज्ञान के लिए नहीं, सिर्फ पढने–लिखने और हिसाब लगाने के लिए नहीं, सिर्फ शैक्षणिक योग्यता के लिए नहीं, बल्कि जिसको आप संपूर्ण मानव कहते हैं, जिसको आप महामानव कहते हैं, जिसको आप आध्यात्मिक मानव कहते हैं, जिसको आप एकात्म मानव कहते हैं, जिसको आप परिपूर्ण मानव कहते हैं, जिसको आप स्थितप्रज्ञ कहते हैं और जिसको अंत में जैसा कि स्वामी विवेकानंद ने कहा था The men with capital aim वह कहते हैं, वह बनने के लिए शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। ऐसे बच्चे तैयार करने वाला है यह विवेकानंद मिलेनियम स्कूल। यह स्कूल शब्द अच्छा नहीं है, यह शिक्षा का मंदिर है, शिक्षा का प्रेरणादायी केंद्र है। मेरी आप सबको शुभकामनाएँ।

जब मैने पहले इस मंच पर आकर सब प्रतियोगी बच्चों को देखा तो मुझे ऐसा लगा कि सारे के सारे बच्चे ऐसे खड़े हैं जिस तरह की कल्पना स्वामी विवेकानंद जी ने की थी। इस पूरे देश का नक्शा बदलने के लिए उन्होंने कहा था कि अगर मेरे जैसे 100 मिल जाएँ तो मैं देश का नक्शा बदल दूँ। इसका मतलब है कि उस समय देश में स्वामी विवेकानंद जैसे 100 लोग भी नहीं थे। इन बच्चों को देखकर मुझे लगा कि वे 100 ये

खड़े हैं। ये 100 वैसे ही बनेंगे। बच्चे को उसकी शिक्षा अगर ठीक से मिलती है तो भारत का जैसा आदमी होना चाहिए वैसा आदमी उसमें से बनता है। पूरे विश्व में आदमी तो एक ही हैं लेकिन भारत का आदमी बिल्कुल अलग है।

इसलिए 1893 में जब शिकागो में world of religion की assembly हुई, सभा हुई तो धर्मों के अनुयायी तो बहुत थे, सभी धर्मों के अनुयायी थे लेकिन उन सबके बीच में स्वामी विवेकानंद जी चमके। विवेकानंद जी ने वेदांत का डंका बजाया। उस धर्म महासभा जिसमें लोग यह सिद्ध करने चले थे कि पूरे विश्व में जितने religions हैं उनमें ईसाई धर्म, Christianity सबसे अच्छा है, ऐसे लोगों के गाल पर तमाचा मारा और स्वामी विवेकानंद जी ने कहा कि मैं ऐसे देश से आया हूँ जिसका ऐसा धर्म है जो किसी को नकारता नहीं है, किसी को मिटाता नहीं है, किसी को समाप्त करने का प्रयास नहीं करता बल्कि सबको स्वीकार करता है। We accept all religions.

ऐसा बोलने वाले स्वामी विवेकानंद जी जब 1893 में वहाँ चमके थे, भारत के हर विद्यार्थी को, हर नौजवान को, हर नागरिक को, हर इंसान को, जहाँ कहीं भी खड़ा हो जाए, ऐसे ही चमकना चाहिए। वैसा चमकाने के लिए परिवार तो है ही लेकिन साथ ही योग्य शिक्षा अगर मिलती है तो विद्यालय में मिलती है, वैसी हमारी शिक्षा होनी चाहिए। स्वामी विवेकानंद जी की शिक्षा उसी प्रकार की थी। Education पर वे बहुत बोले हैं। वे सिर्फ आपको अक्षर ज्ञान मिल जाए, इसकी नहीं सोचते थे। वे शरीर की सोचते थे, वे मन की सोचते थे, वे बुद्धि की सोचते थे, वे प्राण की सोचते थे और वे आत्मा की सोचते थे।

ये पाँचों के पाँचों तत्व मिलकर मनुष्य बनता है और पाँचों के पाँचों तत्वों का समुचित विकास होना चाहिए। इन्हीं पाँचों तत्वों को लेकर स्वामी विवेकानंद जी ने शरीर के लिए अन्नमय कोष कहा। मन के लिए मनोमय कोष कहा। बुद्धि के लिए विज्ञानमय कोष कहा। प्राण के लिए प्राणमय कोष कहा और आत्मा के लिए आनंदमय कोष कहा। ऐसी शिक्षा जिससे पाँचों कोषों का विकास हो, पाँचों तत्वों का विकास हो, ऐसा निर्मित व्यक्ति कहीं पर भी खड़ा हो जाए वह अवश्य चमकेगा, जैसे स्वामी विवेकानंद जी चमके थे।

यह विद्यालय उस तरह का प्रयास करने वाला है। मेरी बहुत बहुत शुभकामनाएँ। आगे इसी तरह से यह बढता रहे। इस विद्यालय से बहुत उम्मीदें हैं।

धन्यवाद!